# LOTUS BUDS

JANUARY ISSUE

## जब तक है जान

ज़िंदगी किताबों के पन्नों के यादों में रह जाए,
ऐसा जीवन जो एक पल में बीत जाए ।
एक भिक्षुक की करो मदद और सम्मान,
परोपकार की नदी बहाओ जब तक है जान।।

हज़ारों बच्चे जो भुख से मृत्यु के क़रीब आते,
कभी नहीं सोचा कैसे हम भोजन को बर्बाद करके सो जाते?
सड़क के बच्चों को सहारा देने का है ठान,
उनके मुँह पर मुस्कान देना जब तक है जान।।

एक बूँद पानी की लड़ाई में थक जाए तन,
छोटी से छोटी चीज़े भरे उनका मन।
वह बच्चे, जो तड़प तड़प कर करते है काम,
प्रेम एवं स्नेह बाँटकर जीयो जब तक है जान।।

- सेहर सिंह, ११ 'ए'

# माँ

माँ तो आख़िर माँ होती हैं,
मेरी, तेरी, या फिर किसी और की ।
कैसे संतान भिन्न भला माँ से हो सकती हैं,
सोलह आने सच है - माँ तो आख़िर माँ होती हैं।।

गर्भ धारण के उन नौ मासों में,
माँ बस्ती है सदा हमारी हर साँसों में ।
माँ सींचती हमारा जीवन बरसों में,
सोलह आने सच है - माँ तो आख़िर माँ होती हैं।।

माँ, तुम राजाओं की माँ,
तुम पीर - फकीरों की भी माँ,
कैसे चलता जग बिना माँ के,
माँ ममता की मूरत है,
माँ सिर्फ़ माँ नहीं, बल्कि एक भावना होती है,
सोलह आने सच है - माँ तो आख़िर माँ होती हैं।।

माँ तो आख़िर माँ होती हैं,
चाहे वह पत्थर पर खुद चलती हैं,
और अपने बच्चे की सुरक्षा करती हैं,
सोलह आने सच है - माँ तो आख़िर माँ होती हैं।।

- विधि चांडक, १२ 'एफ'

## पुराने चित्र

ढूंढ रही थी पुराने चित्र ,
दिवाली की सफाई में,
ढूंढ रही थी उन पुराने यादों को,
जीवन की लड़ाई में।

मिल गए निराले चित्र,
सुना दिए हज़ार किस्से,
मैं बैठकर सुनती रही,
मेरे दिल के छोटे-छोटे हिस्से ।

एक चित्र आँख पर पड़ा,
मेरी प्रिय सहेली का,
चित्र में हम ख़ुशी से गड गड थे,
पास में बैठी थी मेरी माँ।

यह खुशियाँ फिर कब लौटेंगी?
ये यारी भी?
अब तो जीवन मशीन बन गया,
और यह चित्र सताता रह गया।

- अहाना कनोडी, १२ 'ए'

## नवरत्न हमारे हिंदुस्तान के

जब बैठे थे हम सुरक्षित घरों में,
जब चैन की नींद सो रहे थे,
कुछ ऐसे लोग भी थे,
जो खून को नदी में बहा रहे थे।

चलो बात करे उन लोगों की,
उन वीरों की, उन जवानों की,
चलो बात करे उन लोगों की,
जिन्होंने निडर भाव से अपनी जान दी।

देश के लिए लड़ते रहे,
कुछ जीवित रहे, कुछ मरे,
देश के लिए इतनी कुर्बानियाँ दी,
और फिर भी डटे रहे।

सलाम करुँ मैं ऐसे आदर्शों को,
अनमोल नवरत्न हमारे हिंदुस्तान के,
सलाम करो ऐसे वीरों को,
इन्होंने भारत के शान को बढ़ाया,
भारत को जिन्होंने अपना प्राण चढ़ाया,

तो आओ मिलकर सब करे,
उन शहीदियों का नमन।

- ईशानवी गानेरीवाला, ११ 'बी'

## पौधों की महानता

नन्हें मुन्ने पौधें हो तुम,
हर जीवन का आधार हो -
विविधता से पूर्ण हो तुम,
जीवितो का संसार हो |

वृक्ष हो तुम, द्रुम हो तुम,
तरू और लता भी-
गुल्म हो तुम शैवाल भी तुम ,
कवक और घास भी |

फूलों से सजे हो तुम,
और काँटों से भी -
मनमोहक सुगंध से भरपूर,
कभी असहज गंध से भी|

ईश्वर की अद्भुत रचना हो तुम,
प्रकृति का श्रृंगार हो-
हरियाली का माध्यम तुम,
खुशहाली का कारण हो |

सागर नट से मरूस्थल तक,
पाताल लोक से हिमशिखर तक-
तीनों लोको में वास है तेरा,
सर्वविद्यामान हो तुम |

तुममें है वो अद्भूत शक्ति,
जो किसी और में नहीं-
प्रकृति की रसोई हो तुम,
यह गुण किसी और में नहीं।

तुम अम्लराज के हो स्त्रोत,
और बरसात का माध्यम –
ओजोन के रक्षक हो तुम,
और करते तुम  प्रदूषण  का विनाशन।

औषधीय गुणों से भरे हो तुम,
और हो रोगों के विनाशक –
संजीवनी के रूप हो तुम,
बनते हो सबके रक्षक।

बिन तुम्हारे है जीव-जगत निर्जीव,
तुम हो जग का सहारा-
इस संसार का सत्य हो तुम,
तुमको नमन हमारा।

-ऋषिका अग्रवाल, ८ बी

## हिंदी दिवस

हर साल १४ सितम्बर के दिन हिंदी दिवस  मनाया जाता है। अपने विचार और भावनाओं को मौखिक और लिखित रूप से प्रकट करने के लिए हमें भाषा की आवश्यकता होती हैं। इसलिए भाषा बहुत अधिक महत्वपूर्ण होती हैं। भारत अनेक विविधताओं वाला देश हैं, जिसमें विभिन्न धर्म , जाती के लोग रहते हैं। भारत के समस्त लोगो को हिंदी भाषा ने जोड़ के रखा हैं। यह प्राचीन भाषाओं में से एक हैं। हिंदी भाषा के महत्त्व को जानते हुए ही इसे राष्ट्र भाषा कहते हैं। हिंदी दिवस का दिन प्रत्येक वर्ष हमें हमारी असली पहचान की याद तो दिलाता ही हैं, साथ ही यह देश के लोगों को एकजुट होने का काम भी करता हैं।

- अन्विता मिश्रा, ६ 'सी